बी०एड० प्रथम वर्ष (सत्र - 2019-21)

7A - हिन्दी शिक्षण शास्त्र

(Unit - II)

* सूक्ष्म-शिक्षण के सिद्धान्त

(Principles of Micro-Teaching)

* एलेन तथा रियान (1968) ने सूक्ष्म-शिक्षण के अधोलिखित पाँच आधारभूत सिद्धान्तों को स्पष्ट किया है—

1. वास्तविक अध्ययन का सिद्धान्त - सूक्ष्म शिक्षण वास्तविक शिक्षण है।

2. कक्षा-शिक्षण की हासिल जटिलताओं का सिद्धान्त - इस शिक्षण में साधारण कक्षा-शिक्षण की जटिलताओं को कम कर दिया जाता है।

3. विशिष्ट कौशल के विकास का सिद्धान्त - एक समय में किसी भी एक विशेष कार्य तथा शिक्षण-कौशल के प्रशिक्षण पर ही बल दिया जाता है।

4. नियन्त्रित अभ्यास का सिद्धान्त - अभ्यास-क्रम की प्रक्रिया पर अधिक नियन्त्रण रखा जाता है।

5. प्रतिपुष्टि का सिद्धान्त - परिणाम सम्बंधी साधारण ज्ञान एवं प्रतिपुष्टि या पृष्ठ-पोषण के प्रभाव की परिधि विकसित होती है।



Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

## * सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया
## (Operations in Micro Teaching)

किसी विशिष्ट सूक्ष्म प्रकरण (प्रशिक्षणार्थी द्वारा चयनित) को प्रशिक्षणार्थी द्वारा अध्यापन करते समय शैक्षिक आधिगम-सम्बन्धी सम्बन्धी उपकरणों में सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया को वीडियो टेप कर लिया जाता है। छात्राध्यापक अपने द्वारा किए गये शिक्षण-कार्य को आत्मविश्लेषण के द्वारा प्रतिपुष्टि प्राप्त करते हैं। किन्तु भारत में अभी ऐसी सुविधा प्रशिक्षण विद्यालय में उपलब्ध नहीं है। अतः प्रतिपुष्टि (Feedback) के लिए सामान्यतः अधोलिखित विधियों का प्रयोग किया जा रहा है—

(1) पर्यवेक्षक प्रतिपुष्टि (Supervisor Feedback)

(2) सहपाठी प्रतिपुष्टि (Peer Feedback)

(3) वीडियो टेपरिकार्डर

(4) टेपरिकॉर्डर

## * सूक्ष्म शिक्षण-चक्र
## (Micro-Teaching cycle)

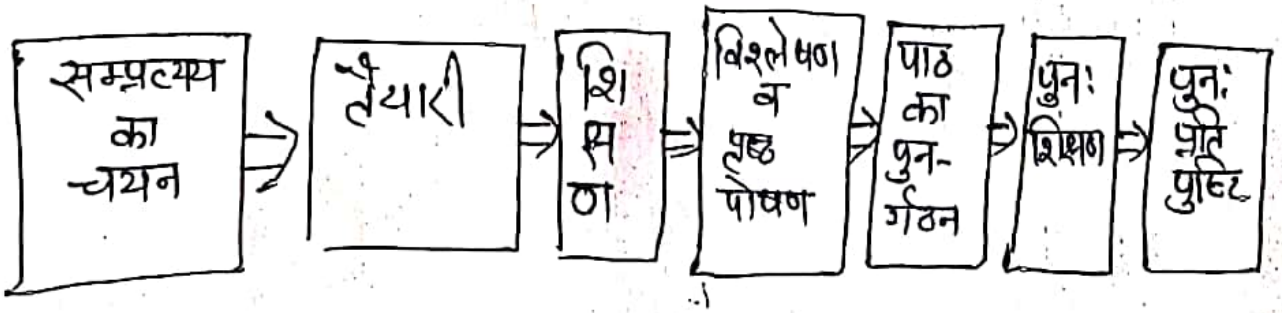




Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

## * सूक्ष्म-शिक्षण व्यवस्था के सोपान

1. प्रस्तावना पद या अभिविन्यास – सबसे पहले प्रशिक्षणार्थियों को सूक्ष्म-शिक्षण के सम्प्रत्यय एवं अर्थ उसके घटक, विशेषताओं गुणों तथा दोषों आदि पर सैद्धान्तिक और व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता है।

2. विशिष्ट शिक्षण-कौशल की ~~व्याख्या~~ परिचर्चा – शिक्षक द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को विशिष्ट शिक्षण-कौशलों के सम्प्रत्यय को स्पष्ट कर उनके मनोवैज्ञानिक आधार तथा घटकों के विषय में विस्तार से बताया जाता है।

3. विशिष्ट कौशल का चयन – किसी एक विशिष्ट कौशल से सम्बन्धित पाठ्यवस्तु का सूक्ष्म प्रकरण का चयन किया जाता है।

4. संक्षिप्त पाठ योजना तैयार/नियोजन (Planning) – प्रशिक्षणार्थी अध्यापक पाठ्यवस्तु की इकाई/प्रकरण पर एक संक्षिप्त पाठ योजना तैयार करता है जिसमें की पूर्व-निर्धारित कौशल का प्रयोग कर सके।

5. शिक्षण-सत्र/शिक्षण (Teaching) – प्रशिक्षणार्थी अपनी योजना के आधार पर 5-10 मिनट तक पाठ को पाँच या दस छात्रों की कक्षा में बनाए गये संक्षिप्त पाठ को पढ़ाता है। शिक्षक-प्रशिक्षक या सहपाठी पाठ का अवलोकन करता है और निरीक्षण-प्रपत्रों पर पाठ के लिए समालोचना संकेत अंकित करता है।



Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

6. आदर्श पाठ प्रस्तुतीकरण - प्रशिक्षणार्थी बताए हुए सूक्ष्म-शिक्षण के आधार पर (सम्बन्धित विशिष्ट शिक्षण-कौशल) आदर्श पाठ प्रस्तुत करता है। इसे ही मॉडल प्रस्तुत करना कहते है। मॉडल प्रस्तुत करने की विधियाँ निम्नलीखित है —

(i) शिक्षक-प्रशिक्षक स्वयं सूक्ष्म-पाठ पढ़कर दिखा सकता है।

(ii) सूक्ष्म-शिक्षण आदर्श पाठ लिखित रूप में भी छात्राध्यापकों को दिया जा सकता है जिसमें पाठ-योजना के प्रस्तुतीकरण का विवरण भी प्रदान किया जाता है।

(iii) आदर्श पाठ को वीडियो, टेप-रिकार्डर या टेलीविजन पर प्रदर्शित किया जा सकता है।

(iv) आदर्श पाठ को साधारण टेप रिकार्डर पर टेप कर के प्रशिक्षणार्थियों को सुनाया जाता है।

7. पाठ निरीक्षण एवं समालोचना — शिक्षक तथा अन्य प्रशिक्षणार्थियों द्वारा इस आदर्श पाठ का विश्लेषण किया जाता है तथा इसकी विशेषताओं, कमियों तथा त्रुटियों पर विचार विमर्श करते है।

8. विश्लेषण व प्रतिपुष्टि/पृष्ठ पोषण (Feed back)

9. पाठ का पुनर्गठन या पुनर्योजना (Replan)

10. पुनः शिक्षण (Reteach)

11. पुनः प्रतिपुष्टि (Refeed back)

12. शिक्षण / पुनः शिक्षण



Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* सूक्ष्म-शिक्षण का निर्धारण

सूक्ष्म-शिक्षण के लिए सामान्यतः निम्नलिखित व्यवस्था का निम्नलिखित व्यवस्था का निर्माण किया जाता है —

* छात्र संख्या — 5 से 10
* निरीक्षक — 1 या 2

| | |
|---|---|
| * शिक्षण अवधि | - 6 मिनट |
| * प्रतिपुष्टि | — 6 मिनट |
| * पुनः योजना | — 12 मिनट |
| * पुनः शिक्षण | - 6 मिनट |
| * पुनः प्रतिपुष्टि | — 6 मिनट |
| | = 36 मिनट |

* सूक्ष्म-शिक्षण का महत्व -
(Importance of Micro Teaching)

1. सूक्ष्म-शिक्षण के माध्यम से अध्यापकों में शिक्षण-कौशलों का विकास सम्भव है।
2. यह अध्यापकों को प्रशिक्षित करने का उत्तम तकनीक है।
3. वास्तविक एवं Peergroup में भी इसका अभ्यास सम्भव है।
4. इसमें लघु-पाठ (Micro-Lesson) बना होता है जिसमें पाठ्यवस्तु को प्राथमिकता दी जाती है। पाठ्य-वस्तु को नहीं।
5. सभी प्रशिक्षणार्थी कौशल विशेष पर ध्यान देते है।



Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

6. तुरन्त प्रतिपुष्टि (Feedback) की व्यवस्था होती है।
7. पाठ को पुनः नियोजित करने की विधा है लेकिन त्रुटियों को सुधार कर पाठ पुनः नियोजित (Replan) करते हैं।
8. यह व्यक्तिगत शिक्षण की विधि है।
9. कक्षा का आकार सीमित होता है अर्थात् 5-10 विद्यार्थी ही होते हैं।
10. एक बार में एक ही शिक्षण कौशल (Teaching Skill) को लिया जाता है।
11. इसमें कालांश का समय 5-7 मिनट होता है।
12. इससे प्रशिक्षणार्थी में आत्मविश्वास बढ़ता है।
13. सूक्ष्म-शिक्षण व्यावसायिक परिपक्वता पैदा करती है।
14. इसका प्रयोग अपने प्रशिक्षण संस्थान में ही किया जाता सम्भव है जिससे स्कूलों में जाने का समय बच जाता है तथा प्रशिक्षणार्थियों को किसी भी प्रकार का संकोच नहीं होता है। क्योंकि इसमें विद्यार्थियों की भूमिका भी सहपाठी छात्र ही निभाते हैं।
15. निरीक्षणकर्त्ता की भूमिका भी सहपाठी छात्र ही निभाते हैं।



Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner